In the name of Allah the Most Gracious the Ever Merciful

بسم اللہ الرحمن الرحیم

Press Desk
Ahmadiyya Muslim Jamaat
INTERNATIONAL
(INDIA)

شعبہ پریس اینڈ میڈیا بھارت
Office Press & Media
Ahmadiyya Muslim Jama'at India,
Qadian-143516, Distt.Gurdaspur, Punjab, India.
Mobile: +91-99887 57988
Email: pressamjindia@gmail.com
Tel: +91-1872-500282
ahmadiyya_press ahmadiyyapressindia

(A Registered Religious and Charitable Society in India under the Societies Registration Act XXI 1860)

زیرحوالہ/Ref **SPM-173**
تاریخ/Date **12-08-2026**

60वाँ जलसा सालाना यूके: हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने ब्रिटेन के सबसे बड़े और सबसे पुराने मुस्लिम सम्मेलन के दौरान वैश्विक शांति और न्याय का आह्वान किया

"पूरे विश्व की शांति और सुरक्षा के लिए दुआ करें और मुसलमानों के अस्तित्व तथा सुरक्षा के लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला हर अहमदी को इस बात की तौफ़ीक़ दे कि वह संसार में एक अल्लाह की प्रभुसत्ता स्थापित करने और पूरी दुनिया में शांति तथा सुरक्षा फैलाने में अपनी पूरी भूमिका अदा करे। अल्लाह तआला हम सभी को ऐसा करने की तौफ़ीक़ दे।" — हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब

24 से 26 जुलाई 2026 के बीच अहमदिया मुस्लिम जमाअत का 60वाँ जलसा सालाना यूके, हैम्पशायर के ऑल्टन में हदीक़तुल महदी में आयोजित हुआ। तीन दिवसीय इस सम्मेलन में विश्वभर से लोग शामिल हुए। इसमें 117 देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया और इसकी कार्यवाही को एमटीए इंटरनेशनल के माध्यम से पूरी दुनिया में सीधा प्रसारित किया गया।

पूरे सम्मेलन के दौरान, अहमदिया मुस्लिम जमाअत के विश्वव्यापी प्रमुख हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने पाँच संबोधन किए, जिनमें उन्होंने मुसलमानों को अल्लाह तआला के साथ अपने संबंध को और अधिक गहरा करने, मानवता के अधिकारों को पूरा करने, असत्य पर सत्य को प्राथमिकता देने और संसार के प्रत्येक भाग में शांति स्थापित करने के लिए प्रयास करने की ओर ध्यान दिलाया।

कार्यवाही का आरंभ शुक्रवार को साप्ताहिक जुमा के ख़ुतबे से हुआ, जो हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने हदीक़तुल महदी से दिया। हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने सभी प्रतिभागियों को याद दिलाया कि जलसा सालाना का उद्देश्य आध्यात्मिक और नैतिक सुधार है। उन्होंने अतिथियों और स्वयंसेवकों को धैर्य तथा निःस्वार्थ सेवा का प्रदर्शन करने की प्रेरणा दी और सभी उपस्थित लोगों को एक-दूसरे से प्रेमपूर्वक मिलने-जुलने की नसीहत की।

इस सभा के मूल उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने कहा:

"सबसे आवश्यक बात वह आध्यात्मिक पोषण है जिसके लिए हम जलसा में आए हैं, और यहाँ हमें अपने आध्यात्मिक जीवन को बेहतर बनाने पर अधिक ध्यान देना चाहिए।"

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने इस बात पर भी ज़ोर दिया कि न तो राष्ट्रीयता और न ही सामाजिक प्रतिष्ठा किसी व्यक्ति को दूसरे पर कोई प्राथमिकता प्रदान करती है। उन्होंने कहा कि सभी प्रतिभागी हज़रत मसीह मौऊद (अ.स.) के समान रूप से अतिथि हैं और उन्हें व्यवस्थाओं में पूर्ण सहयोग करना चाहिए, स्वच्छता बनाए रखनी चाहिए तथा सम्मेलन के अनुशासन और शांतिपूर्ण वातावरण को कायम रखना चाहिए।

शुक्रवार को बाद में, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने ध्वजारोहण समारोह में भी भाग लिया। अहमदिया मुस्लिम जमाअत का ध्वज और यूनियन जैक एक साथ फहराया गया, जो धार्मिक आस्था और राष्ट्र के प्रति प्रेम तथा एकजुटता का प्रतीक था। इसके बाद हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने सामूहिक प्रार्थना का नेतृत्व किया और फिर जलसा सालाना के औपचारिक उद्घाटन भाषण को संबोधित किया।

अपने उद्घाटन संबोधन में हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने *तक़्वा* अर्थात सच्ची धार्मिकता के विषय में बात करते हुए कहा कि ईमान को केवल बाहरी दावों या दिखावे तक सीमित नहीं किया जा सकता। बल्कि सच्चे ईमान के लिए आवश्यक है कि मनुष्य अल्लाह तआला और उसकी मख़लूक़ के अधिकारों को पूरा करे और अपने निजी जीवन में भी वही उच्च नैतिक स्तर बनाए रखे जो वह सार्वजनिक जीवन में प्रदर्शित करता है।

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने कहा:

"यदि हम सफलता प्राप्त करना चाहते हैं, अपना सुधार करना चाहते हैं, अल्लाह तआला के निकट होना चाहते हैं और वास्तविक अर्थों में अहमदी मुसलमान बनना चाहते हैं, तो यह आवश्यक है कि हम अपनी पूरी शक्ति के साथ धार्मिकता के मार्ग पर चलने का प्रयास करें, क्योंकि धार्मिकता के बिना मनुष्य का ईमान का दावा खोखला है।"

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने कहा कि अपने परिवार के प्रति मनुष्य का व्यवहार उसके चरित्र और ईमान को परखने का एक महत्वपूर्ण मापदंड है।

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने कहा:

"मूल बात मनुष्य के हृदय की अवस्था है। हृदय पवित्र होना चाहिए; केवल मौखिक दावे पर्याप्त नहीं हैं। लोग बाहर से बहुत धार्मिक दिखाई दे सकते हैं, अच्छी-अच्छी बातें कर सकते हैं और सुंदर भाषण दे सकते हैं, लेकिन यदि वे घर में अपनी पत्नियों और बच्चों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते और उनकी पत्नियाँ उनके व्यवहार से परेशान रहती हैं, या यदि पुरुषों अथवा महिलाओं का आचरण इस्लामी शिक्षाओं के विपरीत है, तो वे अल्लाह तआला की दृष्टि में ईमान वाले नहीं हैं।"

अपने उद्घाटन संबोधन के अंत में हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने प्रतिभागियों को केवल अपनी आवश्यकताओं को याद रखने के बजाय पूरे संसार के लोगों की पीड़ा को भी ध्यान में रखने की प्रेरणा दी।

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने कहा:

"इन दिनों अल्लाह के स्मरण पर विशेष ध्यान दें। अपने लिए, जमाअत के लिए और मुस्लिम जगत के लिए बहुत अधिक दुआ करें; पूरे संसार के लिए भी बहुत अधिक दुआ करें। अल्लाह तआला लोगों को अपनी पहचान प्राप्त करने की तौफ़ीक़ दे और हमें धार्मिकता के मार्ग पर चलते हुए तब्लीग़ के उद्देश्य को पूरा करने तथा उसका संदेश पहुँचाने की तौफ़ीक़ दे। अल्लाह तआला हमारे लिए और संसार के लिए हर प्रकार की आसानी के साधन उपलब्ध करे, ताकि यह आपदाओं और मुसीबतों से सुरक्षित रह सके।"

शनिवार को हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने जलसा सालाना में शामिल महिलाओं और बच्चियों को विशेष रूप से संबोधित किया। इस्लाम द्वारा महिलाओं को प्रदान किए गए स्थान और उनकी ज़िम्मेदारियों के विषय में बात करते हुए हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने कहा कि इस्लाम के आरंभिक काल से ही मुस्लिम महिलाओं ने इस्लाम की सेवा और उसके प्रचार-प्रसार में निर्णायक भूमिका निभाई है तथा आज महिलाओं को चाहिए कि वे अपने धार्मिक ज्ञान और आत्मविश्वास को बढ़ाएँ, ताकि वे अपने धर्म से संबंधित प्रश्नों का उत्तर दे सकें।

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने कहा:

"इस युग में महिलाओं को भी पुरुषों की तरह तब्लीग़ के क्षेत्र में प्रयास करना चाहिए और यही हमारे समय का जिहाद [संघर्ष] है। पवित्र क़ुरआन में कहीं भी यह नहीं कहा गया और न ही अल्लाह तआला, हज़रत रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) या हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) ने कभी यह कहा कि महिलाओं को तब्लीग़ के क्षेत्र में प्रवेश नहीं करना चाहिए।"

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने स्पष्ट किया कि जिस *जिहाद* [संघर्ष] का उन्होंने उल्लेख किया, उससे तात्पर्य शांतिपूर्ण बौद्धिक और आध्यात्मिक प्रयास से है, जिसके माध्यम से ज्ञान और अपने व्यक्तिगत आचरण के उदाहरण द्वारा इस्लाम की शिक्षाओं का संदेश पहुँचाया जाता है।

अहमदी मुस्लिम महिलाओं को उच्चतम स्तर का ज्ञान और आध्यात्मिक समझ प्राप्त करने का आह्वान करते हुए हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने कहा:

"महिलाओं को अपना ज्ञान बढ़ाना चाहिए... उन्हें ज्ञान और आध्यात्मिक समझ में इतनी अधिक उन्नति करनी चाहिए कि वे केवल पुरुषों के बराबर ही न हों, बल्कि बौद्धिक और आध्यात्मिक मामलों में उनसे आगे निकल जाएँ। तभी आप अपनी आने वाली पीढ़ियों की उचित प्रशिक्षण कर सकेंगी।"

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने कहा कि आने वाली पीढ़ियों के चरित्र और आत्मविश्वास के निर्माण में महिलाओं की केंद्रीय भूमिका है।

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने कहा:

"दुनिया की रक्षा करना और उसे बचाना हमारी ज़िम्मेदारी है। इसके लिए हमें अपनी पूरी शक्ति के साथ प्रयास करना चाहिए।"

शनिवार शाम को हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने अहमदिया मुस्लिम जमाअत की विश्वव्यापी प्रगति के संबंध में अपनी वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने घोषणा की कि पिछले वर्ष के दौरान 398 नई स्थानीय जमाअतें स्थापित की गईं और पहली बार 811 नए स्थानों में जमाअत की स्थापना हुई। कुल 172 मस्जिदें निर्मित या प्राप्त की गईं और 127 मिशन हाउस खोले गए।

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने घोषणा की कि वर्ष के दौरान 132 देशों के 670 से अधिक जातीय समूहों और राष्ट्रीयताओं से संबंधित कुल 2,67,596 लोग अहमदिया मुस्लिम जमाअत में शामिल हुए। उन्होंने यह भी बताया कि अब जमाअत द्वारा पवित्र क़ुरआन का 79 भाषाओं में प्रकाशन किया जा चुका है, जिसमें लिथुआनियाई भाषा में किया गया पूर्ण अनुवाद नवीनतम है।

संबोधन का एक महत्वपूर्ण भाग मानवीय और शैक्षिक पहलों के विवरण पर आधारित था, जिनसे धर्म या पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना लोगों को लाभ पहुँचाया जा रहा है। जमाअत अफ्रीका के 13 देशों में 620 प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों तथा 80 उच्च माध्यमिक विद्यालयों का संचालन कर रही है। अपने अस्पतालों और चिकित्सालयों के माध्यम से वर्ष के दौरान 5 लाख से अधिक रोगियों का उपचार किया गया।

अंतरराष्ट्रीय धर्मार्थ संस्था ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट के कार्यों को उजागर करते हुए हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने कहा:

"ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट के माध्यम से हमें कुल मिलाकर 25 लाख से अधिक लोगों की सेवा करने का अवसर मिला। 26 देशों में 30 प्राकृतिक आपदाओं और युद्ध की परिस्थितियों से प्रभावित 2 लाख से अधिक लोगों को सहायता प्रदान की गई, जिनमें ग़ज़ा में प्रभावित 1,25,000 लोग भी शामिल हैं। चिकित्सा उपचार भी प्रदान किया गया, जिसमें निःशुल्क नेत्र चिकित्सा और मोतियाबिंद के ऑपरेशन भी शामिल थे।"

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने जमाअत के बढ़ते हुए मीडिया और प्रकाशन संबंधी कार्यों का भी उल्लेख किया। उन्होंने बताया कि इसके टेलीविज़न और रेडियो कार्यक्रम अनुमानतः 23 करोड़ लोगों तक पहुँचे, जबकि समाचार पत्रों में प्रकाशित सामग्री की संभावित पाठक संख्या लगभग 18 करोड़ रही। हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने कहा कि यह प्रगति मानवीय शक्ति या धन का परिणाम नहीं, बल्कि अल्लाह तआला के आशीर्वाद का परिणाम है।

रविवार को हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने सम्मेलन का समापन संबोधन किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि बैअत, अर्थात् निष्ठा की प्रतिज्ञा, वास्तविक और स्थायी नैतिक तथा आध्यात्मिक परिवर्तन की मांग करती है। जो व्यक्ति सांसारिक हितों पर धर्म को प्राथमिकता देने की प्रतिज्ञा करता है, उसे एक अल्लाह की उपासना करने, दूसरों के अधिकारों को पूरा करने तथा हर प्रकार के असत्य, अन्याय, अहंकार और क्रूरता को त्यागने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए।

विश्व की वर्तमान स्थिति की ओर ध्यान दिलाते हुए हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय मामलों और राजनीति में बेईमानी गहराई तक जड़ें जमा चुकी है।

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने कहा:

"आज हम देखते हैं कि ऐसा प्रतीत होता है कि संसार में केवल असत्य का ही शासन है। अंतरराष्ट्रीय राजनीति, राष्ट्रीय राजनीति या लोगों के एक-दूसरे के साथ सामाजिक संबंधों को देख लें: लोगों का मानना है कि असत्य का सहारा लिए बिना कुछ भी हासिल नहीं किया जा सकता।"

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने कहा कि एक ईमान वाले व्यक्ति को लोकप्रियता या राजनीतिक सुविधा के आधार पर सत्य को निर्धारित नहीं करना चाहिए।

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने कहा:

"एक ईमान वाले व्यक्ति को यह देखना चाहिए कि वास्तविकता क्या है और सत्य क्या है। उसे यह नहीं देखना चाहिए कि उसके आसपास के लोग क्या कह रहे हैं। हमें यह देखना चाहिए कि अल्लाह तआला हमसे क्या कहता है। यदि हम ऐसा करने में असफल रहते हैं तो हमारा ईमान पूर्ण नहीं है।"

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने प्रतिशोध की भी निंदा की। उन्होंने कहा कि स्थायी शांति के लिए आवश्यक है कि लोग और राष्ट्र शत्रुता के स्थान पर दया को अपनाएँ और दूसरों की साझी मानवता को पहचानें।

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने कहा:

"इसलिए, यदि आप संसार में शांति स्थापित करना चाहते हैं, तो आपको करुणा का वातावरण पैदा करना चाहिए, प्रेम और स्नेह के साथ मिल-जुलकर रहना चाहिए और केवल एक-दूसरे से ही नहीं, बल्कि प्रत्येक इंसान से प्रेम करना चाहिए।"

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने कहा कि यदि अहमदी मुसलमान अपनी बैअत की ज़िम्मेदारियों को पूरा करें, तो उनका उदाहरण और उनका शांतिपूर्ण संदेश धार्मिक कट्टरता तथा धर्म के प्रति शत्रुता, दोनों का मुकाबला करने में सहायता कर सकता है।

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने कहा:

"यदि हम अपने भीतर पवित्र परिवर्तन उत्पन्न करें, अपनी बैअत की ज़िम्मेदारियों को पूरा करें और उसकी शर्तों पर पूरी तरह अमल करें, तो हम न केवल अपने बीच एक पवित्र समाज स्थापित करेंगे, बल्कि इस्लाम के सच्चे और शांतिपूर्ण संदेश को

फैलाकर मुसलमानों, ग़ैर-मुसलमानों, इस्लाम के विरोधियों और यहाँ तक कि नास्तिकों तक भी ऐसी शिक्षा पहुँचाएँगे जो अंततः उन्हें इस बात पर आश्वस्त करेगी कि अहमदी एक अल्लाह की प्रभुसत्ता स्थापित करना और उच्चतम नैतिक मूल्यों को कायम रखना चाहते हैं, ताकि संसार उपद्रव का स्थान न बने बल्कि शांति और सुरक्षा का आश्रय बन जाए।"

अपने समापन शब्दों में हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने एक बार फिर अहमदिया मुस्लिम जमाअत के सदस्यों का ध्यान पूरी मानवता की शांति और सुरक्षा की ओर आकर्षित किया।

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने कहा:

"पूरे संसार की शांति और सुरक्षा के लिए दुआ करें और मुसलमानों के अस्तित्व तथा सुरक्षा के लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला हर अहमदी को इस बात की तौफ़ीक़ दे कि वह संसार में एक अल्लाह की प्रभुसत्ता स्थापित करने और पूरी दुनिया में शांति तथा सुरक्षा फैलाने में अपनी पूरी भूमिका अदा करे। अल्लाह तआला हम सभी को ऐसा करने की तौफ़ीक़ दे।"

इसके बाद हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने सभी को उनके साथ मौन प्रार्थना में शामिल होने का आह्वान किया। प्रार्थना के बाद हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने घोषणा की कि 2026 के जलसा सालाना यूके में उपस्थित लोगों की संख्या 51,181 तक पहुँच गई। इसके पश्चात विभिन्न समूहों द्वारा कविताएँ प्रस्तुत की गईं और फिर हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब वहाँ से रवाना हुए, जिसके साथ 60वाँ जलसा सालाना यूके संपन्न हुआ।

Tariq Ahmad K
Incharge Press & Media,
Ahmadiyya Muslim Jama'at India.